समकालीन आकृति मूलक चित्रकार : डॉ (श्रीमती) पुष्पा द्रविड

डॉ. वासंती (बक्षी) जोशी*

ग्वालियर जन्मी पुष्पा काले डा. काले की पुत्री हैं। आपका जन्म ग्वालियर में 23 नवम्बर 1941 को हुआ। आपके पिता का नाम श्री वी. एस. काले एवं माता का नाम श्रीमती मनोरमा काले था। आपका निवास नई सड़क में अत्रे के मकान में था। वहीं प्रसिद्ध चित्रकार श्री एल. एस. राजपूत रहते थे एवं यू. कुमार श्रीवास्तव चित्रकार रहते थे। शायद यही कारण रहा हो पुष्पा काले का रुझान चित्रकला की ओर बढ़ा। आपने बी.ए. जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर, नेशनल डिप्लोमा इन फाईन आर्ट ग्वालियर (मध्य प्रदेश टेक्निकल बोर्ड भोपाल) एम. ए. चित्रकला विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन से उत्तीर्ण की तब ग्वालियर में एम. ए. की परीक्षा का संचालन नहीं होता था। आप शासकीय ललित कला संस्थान में श्री एल. एस. राजपूत की शिष्या रही हैं। श्री राजपूत साहब एक ऐसे प्रेरणा स्रोत गुरु थे जिनके शिष्यों ने कलाक्षेत्र में कहीं न कहीं अपनी आमद दर्ज की है। उनका शायद ही कोई शिष्य ऐसा हो जिसने प्रयत्न किया और सफलता न पायी हो, फिर वह फ्रीलांस कलाकार बना हो या कला कार्य कर रहा हो वह सफल ही रहा है। आप भी एक सफल शिक्षक एवं कलाकार हैं। आप विवाह के बाद बैंगलौर बस गयीं परंतु आज भी आप इस माटी से जुड़ी हैं एवं अपने गुरुजनों को याद करती हैं। उनके कला के योगदान एवं कलाकृति के संरक्षण के बारे में सोचती हैं। आपका कहना है कि श्री एल. एस. राजपूत जाने माने कलाकार हैं। उनकी कला उनके घर में वैसे ही पड़ी है। उनके बारे में प्रदेश का क्या सोचना है यह जानना चाहिये। मध्य प्रदेश के ऐसे कलाकारों के बारे में कुछ सोचना एवं इस पर प्रकाश डालना चाहिये। उन पर पुस्तकें लिखें एवं प्रदेश के कलाकार को मध्य प्रदेश के बाहर पहचान दिलानी चाहिये जो हमारे बीच नहीं है उनकी कला को संभाल कर रखना चाहिये। इतना लगाव उन्हें प्रदेश के कलाकारों से व अपने गुरुजनों से है।

1965 की कालिदास प्रदर्शनी ग्वालियर में आयोजित हुई थी। जिसमें आपके तीन चित्र– 'लोक जीवन की भित्ति', 'ग्रीष्म की दोपहरी के 11 बजे' तथा 'संरचना' क्रमशः जलरंग, तैलरंग तथा लकड़ी के कोलाज माध्यम से चित्रित थे। 'लोक जीवन की भित्ति' जो कि प्रदर्शनी में सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार से सम्मानित की गई उसमें लोक एवं प्रागैतिहासिक काल के आकारों का सुंदर समन्वय तो है ही साथ ही साथ चित्र की पार्श्व भूमि में विभिन्न रंगों के बहाव में जो रुचिकर एवं आकर्षक प्रभाव उत्पन्न किया गया है उसके लिए वास्तव में कलाकार बधाई की पात्र हैं। इस सफल कृति को देखकर न केवल लोक एवं प्रागैतिहासिक काल के आकारों से परिचित होते हैं इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि रंगों के इस फैलाव की इस प्रविधि में कलाकार पूर्णतया परिपक्वता ग्रहण कर चुकी है। 'ग्रीष्म की दोपहरी के 11 बजे' चित्र में 'नायक पेन्टिंग' प्रभाववादी परम्परा को निभाये हुए हैं। छायादार पेड़ से झांकते, धूप के टुकड़े चित्र को आकर्षक बनाये हुए हैं। चित्र को ध्यानपूर्वक देखने से समय का ठीक से पता चलता है। दूर दरवाजे तक फैली हुई धूप ग्रीष्म की चटकता दर्शाती है। संपूर्ण चित्र धूप और छांव की एक संतुलित रचना है। तृतीय कृति संरचना कलाकार की प्रयोगवादी प्रवृत्ति का प्रतीक है। सच में इस रचना में कलाकार ने माध्यम की स्वतंत्रता भी चाही है। रशियन

* विभागाध्यक्ष चित्रकला विजयाराजे, शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प.)।

कलाकार वाल्दीमार तातलिन द्वारा शोध की गई भविष्यवादी अथवा निर्माणवादी कला परंपरा को अन्य राष्ट्रों के कलाकारों ने अपनाया और चित्रों में तार कांच आदि का प्रयोग शुरू कर दिया था। भारत में भी इस प्रकार के प्रयोग हमने न जाने कितनी ही बाहरी प्रदर्शनियों में देखे पर ग्वालियर की इस सांस्कृतिक नगरी में यह पहला प्रयोग है जबकि किसी कलाकार ने लकड़ी के टुकड़ों को चित्र में स्थान दे माध्यम में भी स्वतंत्रता प्राप्त की हो। यह प्रयोग काफी सफल हुआ है।

कला समीक्षक हरी भटनागर ने 1965 की ग्वालियर मेला प्रदर्शनी पर आपके बारे में लिखा था कि आप भविष्य में ग्वालियर की परम्परा को गौरवान्वित करेंगी। यह 1965 की उक्ति आपने सार्थक कर दी।

आप मध्य प्रदेश की वह महिला हैं जिसने एन.डी.एफ.ए. एवं एम.ए. सर्वप्रथम किया। आप 1966–67 में नूतन महाविद्यालय इन्दौर की प्राध्यापक, 1968 तक डिपार्टमेंट ऑफ आर्केटेक्चर बैंगलोर विश्वविद्यालय में व्याख्याता, 1985 से बैंगलोर विश्वविद्यालय में डिपार्टमेंट ऑफ आर्केटेक्चर की प्राध्यापक एवं सेवानिवृत्ति तक कार्यरत रहीं। सन् 2000 में आपने शिक्षकीय कार्य के साथ पीएचडी को अंजाम दिया। आपको शोध कार्य हेतु आय.सी. एच.आर. द्वारा फेलोशिप प्राप्त हुई थी। आपके शोध उपाधि का विषय 'प्रो. निकोलस रौरिक एवं उनकी हिमालयन पेन्टिंग' था।

श्री. एल.एस. राजपूत को आप अपना गुरु मानती हैं। श्री विश्वमित्र वासवानी, श्री मदन भटनागर, श्री चन्द्रेश सक्सेना एवं श्री हरि भटनागर मध्य प्रदेश ग्वालियर के कलाकारों का सहयोग आपको बराबर मिलता रहा। आप स्वयं भी कहती हैं कि उनका प्रभाव भी आप पर सदा रहा। आप हजारों पेन्टिंग बना चुकी हैं। आपकी स्वयं की कलावीथिका है और वही आपका निज निवास है। आपकी वीथिका का नाम सृष्टि, 952, 12जी मेन हॉल, 11 इटेज बैंगलोर है जहॉ आपकी पेन्टिंग सदैव प्रदर्शित रहती हैं वहीं आपका स्टूडियो है। आप उद्यमी एवं सतत कार्यशील महिला कलाकार हैं। महिला कलाकार की है कि उसे घर के साथ व्यवसाय एवं पेन्टिंग का कार्य करना होता है। अतः समय का अभाव सदैव बना रहता है। उसके बावजूद भी आपने अपने जीवन में अनेक उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं एवं अनेक कार्य किये हैं। जो शायद यहांपूरे वर्णित भी नहीं हो सकेंगे। आपका समय संतुलन भी सचमुच काबिले तारीफ है।

आपकी प्रारंभिक पेन्टिंग जलरंग में लोक विषय पर आधरित है। जैसे सांझी, टेसू, दुर्गा, गणेश व गौरी पर आधारित हैं। उसके बाद सार्वजनिक जीवन पर आधारित विषयों पर बने चित्र रेखा संयोजन एवं रंग संयोजन पर आधारित हैं आपका कहना है कि मैं सभी प्रकार के चित्र करती हूं मैं अपने आपको किसी विशिष्ट पद्धति में जबरदस्ती बिठाना नहीं चाहती। यह आपका कहना 1998 तक रहा है।

जब आप कला क्षेत्र में उतरीं तब आप वाश टेम्परा में कार्य करती थीं। आपकी रुचि जलरंग के कार्य में अधिक रही है। आपने अलंकारिक वाश, टेम्परा पद्धति में कार्य किया। आपकी पेन्टिंग्स लगभग 6"x4" फुट की रहती थी परंतु बाद में आपने छोटे पेन्टिंग्स बनाना शुरू कर दिये। कारण कि बड़े पेन्टिंग को ग्लास लगाने के बाद वे वजनी हो जाते थे। अतः उन्हें दूसरी जगह ले जाना एवं टांगने में परेशानी आती थी। अतः आप छोटे आकार के

पेन्टिंग बनाने लगीं। सत्तर के दशक से आपने तैलरंग में काम शुरू किया। परंतु आपकी तकनीक में जलरंग का प्रभाव बना रहा। आपके चित्रों में तैलरंग, जलरंग तकनीक दिखाई देती है। आपकी आकृति चित्रण में श्री राजपूत साहब का प्रभाव है। कुछ प्रभाव आपके ऊपर बेन्द्रे साहब का भी परिलक्षितहै। यद्यपि आपकी संयोजन की पद्धति उनसे अलग है। जिसमें लालित्य है गहराई है। स्थान विभाजन में आपकी अपनी मौलिकता है। आपके चित्रों में जलरंगीय प्रभाव, पोत, आकृति में यथार्थ का प्रभाव है। अनेक तकनीक के सामजस्य के साथ चित्रों में लयात्मकता, रंगों को संतुलित करने का आपका अपना तरीका है। बड़े स्थान में चटक रंग देकर उसे संतुलित करना आपकी विशेषता है। कहीं पोत से तो कहीं रंगों के मेल से उसे संतुलित किया गया है। प्रकृतिक आकृति श्रृंखला 2007 में प्राकृतिक आकृतियों का सुंदर समन्वय आपके द्वारा किया गया है। इस श्रृंखला के आपके चित्र Last in Thought, Expectation, Ragini, Women and Goat, Warmph, Ganesh, Listening (Shruti), Aspirations, Women at Work, Folk Musicians आदि हैं। 2006 की चित्र श्रृंखला कार्यरत विनायक, प्रतीक्षा, पेड़, एवं नाविक आदि हैं। (चित्र संख्या–7)

आप जब बैंगलोर विवाह होकर गईं तब बैंगलोर में चित्रकला क्षेत्र में विशेष कार्य नहीं होता था। आप एवं आपके सहयोगी कलाकार ने मिलकर एक छोटे से कमरे में स्कूल चलाया। वहां आपने एवं आपके सहयोगी कलाकारों की मेहनत ने उसे बड़े कला संग्रह एवं प्रदर्शनियों हेतु विकसित किया एवं एम. ए. की कक्षाएं भी चलाईं एवं बैंगलोर विश्वविद्यालय से सम्बद्धता करवाई। आज बैंगलोर में महाविद्यालय एवं कला वीथिका बन चुकी है। आप जैसे कुछ कलाकारों ने वहां महाविद्यालय एवं प्रदर्शनी आदि का कार्य प्रारंभ करवाया। यह आपके जीवन की एवं ग्वालियर के एक कलाकार की मेहनत की सफलता ही कही जायेगी।

आपने बैंगलोर से अपनी एकल प्रदर्शनी शुरू की है:–

1. 1972 विश्वेस्वरैया ट्रेड सेन्टर, बैंगलोर
2. 1983 एलायंस फ्रेंकेस, बैंगलोर
3. 1985 ऑल इण्डिया फाईन आर्ट क्राफ्ट सोसाइटी, नयी दिल्ली
4. 1986 जहांगीर आर्ट गैलरी, मुम्बई
5. 1986 होटल हर्षा, बैंगलोर
6. 1994 कारीडोर ऑफ कलर्स सेन्टर पार्क, बैंगलोर
7. 1999 कॉटेज आर्ट गैलरी, पालो अल्टो सी.ए., यू.एस.ए.
8. 2000 भारतीय विद्या भवन, लन्दन
9. 2004 जेक्सन सिविक सेन्टर टेक्सॉस, यू.एस.ए.
10. 2005 दरबार हॉल, कोच्चीन
11. 2006 इंडिया हैबीटेड सेन्टर, नयी दिल्ली
12. 2007 द विन्डसर वेलकम आर्ट गैलरी, बैंगलोर
13. 1983 समूह प्रदर्शनी

आपने लगभग 15 राज्य एवं राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किये जो उज्जैन, ग्वालियर, बैंगलोर, मैसूर आदि स्थानों से प्राप्त हुए हैं।

आपने अनेक प्रदर्शनियों में शिरकत कीः–

1. मध्य प्रदेश राज्य प्रदर्शनी ग्वालियर में तीन बार
2. कालिदास चित्रमूर्ति प्रदर्शनी में तीन बार
3. दशहरा प्रदर्शनी मैसूर चार बार।

आपके मुख्य पुरस्कार : –

- 1965–66 अखिल भारतीय कालिदास प्रदर्शनी, उज्जैन
- 1965–66 अखिल भारतीय चित्रकला प्रदर्शनी, ग्वालियर
- 1968, 72 अखिल भारतीय प्रदर्शनी सी. के. पी., बैंगलोर
- 1968, 69, 70, 84 अखिल भारतीय दशहरा प्रदर्शनी, मैसूर
- 1969, 70, 72, 80 राज्य ललित कला अकादमी, बैंगलोर
- 2000 ललित कला अकादमी, बैंगलोर, कर्नाटक

आपने अनेक प्रदर्शनियों, प्रतियोगिताओं में शिरकत भी की है–

- 1965,66,67 मध्य प्रदेश राज्य चित्रकला प्रदर्शनी, ग्वालियर
- 1965,66,67 अखिल भारतीय कालिदास चित्रकला प्रदर्शनी, उज्जैन
- 1968,69,70,74 दशहरा प्रदर्शनी, मैसूर
- 1968,69,70,72 अखिल भारतीय प्रदर्शनी सी. के. पी., बैंगलोर
- 1980 ट्रेन्ड्स इन द साउथ, ललित कला अकादमी मैसूर, हैदराबाद, त्रिचूर एवं दिल्ली
- 1968,69,72,80 राज्य ललित कला अकादमी, बैंगलोर
- 1967–82 राष्ट्रीय चित्रकला प्रदर्शनी, दिल्ली
- 1985 युवा लेखक एवं कलाकार गिल्ड, बैंगलोर
- 1987 सार्क प्रदर्शनी सी.के.पी., बैंगलोर
- 1988 कर्नाटक उत्सव, दिल्ली
- 1989 आस्टा शोध केन्द्र, सी.के.पी., बैंगलोर
- 1990 मंजुनाथ हेगड़े स्मारक प्रदर्शनी, धर्मस्थल
- 1990 रिजनल आर्ट एग्जीबिशन, चैन्नई
- 1993 सर्वधर्म सम्मेलन (विश्व धर्म संसद)
- 1995 अखिल भारतीय समकालीन प्रदर्शनी, बैंगलोर
- 2002 भारतीय विद्या भवन, लन्दन

आपके चित्रों का संग्रह अनेक संग्रहालयों वीथिका एवं संस्थान में संग्रहित हैः–

- कर्नाटक राज्य अकादमी ललित कला, बैंगलोर
- कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़
- शासकीय संग्रहालय, मैंगलोर
- शासकीय संग्रहालय, हस्सन
- स्कूल ऑफ आर्ट्स देवंगरे, Davangere

- परिवहन (ज्वनतपेउ) विभाग, कर्नाटक
- वैलिंगटन आर्ट गैलरी, मैसूर
- ताज आर्ट गैलरी, मुम्बई
- पेनसिल्वेनिया स्टेट यूनिवर्सिटीए U.S.A.
- एलाइंस फ्रेंकेस, बैंगलोर
- चौथा राष्ट्रीय खेलए बैंगलोर
- बैंगलोर विश्वविद्यालय, बैंगलोर
- शासकीय संग्रहालय, कोच्चीन
- भित्तिचित्र (Mural)

आपको अनेक लोकजन समाज संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया –

- 1993 में कलाक्षेत्र के योगदान के लिए अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर स्नेहधारा बैंगलोर द्वारा सम्मानित
- 1995–49वें वार्षिक वृहद्व महाराष्ट्र परिषद, प्लेनियम जुबली, महाराष्ट्र मंडल, बैंगलोर
- 1998 आर्किटेक्ट काउन्सिल ऑफ इन्डिया, बैंगलोर
- 1998 मोस्ट वेल्यूएबल टीचर ओल्ड स्टूडेंट एसोसिएशन, बैंगलोर युनिवर्सिटी
- 2007 विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, मध्य प्रदेश द्वारा 50वीं सालगिरह पर सम्मानित
- इन्दौर कलाग्राम द्वारा सम्मानित किया गया।

आप अनेक संस्थाओं की सदस्या भी रहीं–

1. 1967–68 इंदौर आजीवन सदस्य सी.के.पी., बैंगलोर
2. 1967–68 इंदौर विश्वविद्यालय के चित्रकला के बोर्ड ऑफ स्टडीज फेकल्टीज की सदस्या
3. 1969–85 बैंगलोर विश्वविद्यालय के चित्रकला के बोर्ड ऑफ स्टडीज फेकल्टीज की सदस्या
4. 1980–2005 बैंगलोर विश्वविद्यालय के बोर्ड ऑफ स्टडीज फेकल्टीज वास्तुशास्त्र की सदस्या

अनेक सेमिनार एवं शिविर में भागीदारी रही हैः–

- 1987 अखिल भारतीय संगोष्ठी चित्रकला, बैंगलोर
- 1989 अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार रौरिक कन्ट्रीब्यूशन द इण्डियन कल्चर, बैंगलोर
- 1990 कर्नाटक कला महोत्सव
- 1991–92 सेमिनार कला और समाज, मद्रास

कार्यशाला :–

- 1976 राज्य ललित कला अकादमी, मैसूर
- 1977 कर्नाटक चित्रकला परिषद, बैंगलोर
- 1980 राज्य ललित कला अकादमी, बैंगलोर

- 1981 युवा लेखक एवं चित्रकार क्लब, बैंगलोर
- 1984 आर्टिस्ट कैम्प आर्ट काम्पलेक्स, बैंगलोर
- 1985 सिरेमिक कैम्प आर्ट काम्पलेक्स, बैंगलोर
- 1985 ग्राफिक कैम्प आर्ट काम्पलेक्स, बैंगलोर
- 1985 विश्व कनाडा सम्मेलन, बैंगलोर

इस तरह उक्त उपलब्धि एवं 1967 से कलाक्षेत्र में कार्यरत एक महिला कलाकार जो अपने प्रदेश एवं शहर से दूर रहकर बड़ी ही लगन परिश्रम के साथ कलाक्षेत्र में कार्य किया। बैंगलोर में कला का वातावरण बनाने में सहयोग कर आपने गुरु श्री एल. एस. राजपूत एवं ग्वालियर के साथ मध्य प्रदेश को गौरवान्वित किया है। यद्यपि अब उनका 1967 से बैंगलोर ही निवास एवं कर्मभूमि बन गया है परंतु जिस ग्वालियर ने उन्हें बनाया था। उसका लाभ बैंगलोर, कर्नाटक को मिला है। आज ग्वालियर ऐसी विभूति पर अपने आप को गौरवान्वित महसूस करता है। वे आज भी अपने ग्वालियर को एवं अपने गुरु के मार्गदर्शन को भूली नहीं हैं। ग्वालियर के हर कलाकार के प्रति उनका स्नेह है। वे आग्रहपूर्वक उन्हें आमंत्रित करती हैं एवं प्रदेश से संपर्क बनाये रखती हैं। उनका कहना है जो प्रदेश छोड़कर चले गये उन्हें प्रदेश को भी नहीं भूलना चाहिये। इस माटी सुगंध की ओर वह सदैव आकर्षित रहती हैं। प्रदेश भी उन्हें याद करता है।